(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है; और

(घ) यदि हीं, तो सरकार इस संबंध में क्या कार्यवाही करने का विचार रखती है ?

विज्ञान और प्रोद्योगिकी मंत्रालय और महासागर विकास, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष और इलैक्ट्रानिकी विभागों में राज्यमंत्री (श्री शिवराज पाटिल) : (क) केन्द्रीय भवन अनुसधान संस्थान (सी बी आर आइ) रुड़की, द्वारा विकसित की गई सस्ती तकनीकें नेशनल बिल्डिंग आर्गेनाईजेशन की प्रायोगिक परियोजनाओं में सम्मिलित की जा रहीं हैं ताकि भवनों के निर्माण में उनका प्रभावी उपयोग किया जा सके।

(ख) और (ग) सी बी आर आइ रूड़की द्वारा विकसित और विभिन्न सरकारी/अर्धसरकारी विभागों द्वारा भवन निर्माण के लिए अपनाई गई तकनीके संलग्न सूची (विवरण) में दी गई हैं।

नेशनल बिल्डिंग ऑर्गेनाईजेशन (एन बी ओ) ने केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सी बी आर आइ) में विकसित की गई बहुत सी तकनीकें, सामग्री और विशिष्टियों का उपयोग ग्रामीण और नगर क्षेत्रों के लिए साहित्य और अपने प्रायोगिक आकलन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने आवास तथा गृह निर्माण योजनाओं में किया है। हाउसिंग एण्ड अरबन डवलपमैंट कॉरपोरेशन (एच यू डी सी ओ) ने कम लागत की बहुत सी आवासीय योजनाओं पर धन लगाया है जिनमें सी बी आर आइ की तकनीकों और वन निर्माण सामग्री का उपयोग किया है। लोक निर्माण, शिक्षा, स्वास्थ्य और बहुत से राज्यों के आवास संबंधी विभागों द्वारा सी बी आर आइ की तकनीकों और अभिकल्पों, विशिष्टियों और संस्तुतियों का समावेशन कर बहुत सी निर्माण योजनाओं को कार्यान्वित किया है।

(घ) प्रश्न नहीं उठता।

विवरण

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सी बी आर आइ) रूड़की द्वारा विकसित और विभिन्न सरकारी/अर्ध सरकारी विभागों द्वारा भवन निर्माण के लिए अपनाई गई तकनीकें :

1. अन्डर-रीम्ड पाईल नींव;
2. चार मंजली इमारतों के लिए एकल मोटाई की भारवाहक इंट की दीवारें;
3. पत्थर ब्लॉक मेसनरी;
4. पूर्व सांचित आर सी सी छत निर्माण और फर्श निर्माण प्रणाली;
5. पूर्व सांचित रि-इनफोर्सड ईंट पैनल छत निर्माण;
6. पूर्व सांचित आर सी सी थिन लिनटल्स;
7. प्लम्बिंग की सिंगल स्टेक प्रणाली
8. जलयुक्त चूना;
9. क्ले पोजोलेना; और
10. लोअर सीलिंग हाइट्स, आदि।

चन्दन के तेल, आदि का निर्यात

452. **श्री रामचन्द्र विकल** : क्या **वाणिज्य और पूर्ति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चन्दन के तेल, नीबू के तेल तथा एलोकाष्ठ और इसके तेल (अगर) की कीमत क्या है जिनका गत तीन वर्षों के दौरान निर्यात किया गया था और इनका किन-किन देशों को निर्यात किया गया था;

(ख) क्या विदेशों में इन वस्तुओं को सुगंध/इत्र संबंधी उद्योग में मुख्य घटक के रूप में प्रयोग किया जाता है;

(ग) यदि हां, तो सरकार सुगन्ध बनाने वाले देशीय कुटीर उद्योग के विकास हेतु सुविधाएं जुटाने के लिए क्या कदम उठा रही है ताकि वे कच्चे माल की बजाए तैयार उत्पादों का निर्यात कर सकें ?

वाणिज्य और पूर्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पी० ए० संगमा) : (क) एक विवरण संलग्न है।

(ख) चन्दन के तेल, नींबू-घास तेल आदि का प्रयोग सामान्यतः सुगंध/इत्र संबंधी उद्योग में घटकों के रूप में किया जाता है।

(ग) इस उद्योग के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए सुगंध तेलों तथा सुगंध आधारित योगिकों का उत्पादन लघु क्षेत्र में अनन्य तौर पर विकास के लिए आरक्षित है। इन मदों का निर्यात करने वाले एकक उन्हीं के बराबर सुविधाओं के हकदार हैं जो अन्य लघु क्षेत्रीय निर्यात-कर्ता एककों को उपलब्ध हैं।

विवरण

चन्दन के तेल, नींबू-घास तेल ऐलोकाष्ठ (अगर) तथा इसके तेल का निर्यात निष्पादन और उनके देशों के नाम, जिन्हें उनका निर्यात किया जाता है

(मूल्य लाख रु० में)

मद का नाम	निर्यात के वर्ष			देश जिन्हें निर्यात किया जाता है
	1981–82	1982–83	1983–84	
1. चन्दन का तेल	245.04	251.3*	490.0*	कनाडा, फ्रांस, जापान, नैदरलैंड, सूडान, स्विटजरलैंड, यू० ए० ई०, ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत संघ, जर्मन संघीय गणराज्य, साउदी अरेबिया।
2. नीम्बू-घास तेल	88.52	122.5*	42.4*	आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, फ्रांस सं०रा०अमरीका, सोवियत संघ, नैदरलैंड, जर्मन, संघीय गण-राज्य, ब्रिटेन बहरीइन।
3. ऐलोकाष्ठ (अगर)	21.79 (नव. 82तक)	6.09	उपलब्ध नहीं	बहरीइन, इथोपिया, केन्या, कुवैत, नेपाल, ओमन, सउदी अरेबिया, सोमालिया, यू० ए० ई०, सं० रा० अमरीका, ब्रिटेन, हांगकांग, यमन अरब गण-राज्य, श्री लंका।

*अगर तेल के निर्यात आंकड़े उपलब्ध नहीं है क्योंकि यह संशोधित भारतीय व्यापार वर्गीकरण में अलग से वर्गीकृत नहीं है। तथापि, इसका निर्यात मुख्यतः सोवियत संघ को किया जाता है।

(स्रोत : मन्थली स्टेटिस्टिक्स आफ फारेन ट्रेड आफ इंडिया, वाणिज्यिक जानकारी तथा अंक संकलन का महा निदेशालय, कलकत्ता और आधारभूत रसायन, भेषज तथा प्रसाधन निर्यात संवर्धन परिषद, बम्बई)